खेती री बातां

वर्ष–16 अंक–3 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 मार्च 2013 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

किसान और कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहन के लिए सरकार सदैव प्रयत्नशील

जयपुर, 13 फरवरी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में किसानों एवं उपनिवेशन सिंचित क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व बैठक में कहा कि किसान और कृषि सदैव हमारी प्राथमिकताओं में रहे हैं और इसी उद्देश्य से आगामी बजट 2013–14 से पहले किसानों के महत्वपूर्ण सुझाव ले रहे हैं, जिससे कृषि क्षेत्र का विकास हो और किसानों को अधिक आर्थिक लाभ मिले। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों की सदैव हितैषी रही है, किसानों के हित में ही सरकार ने बिजली दरें पांच वर्ष तक नहीं बढ़ाने का निर्णय लिया, जिस पर हम कायम हैं और राज्य सरकार पांच हजार करोड़ रूपए प्रतिवर्ष बिजली कंपनियों को भुगतान कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रतिवर्ष किसानों को करीब दस हजार करोड़ रूपए का ऋण दे रही है, चार साल पहले तक यह राशि केवल ढाई हजार करोड़ रूपए ही थी। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा एक लाख रूपए का ऋण समय पर चुकाने पर कोई ब्याज भी नहीं लिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को सोलर आधारित पम्प सैट लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है इस पर 86 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे इजरायल में उपयोग लाई जा रही बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति को अपनाएं।

श्री गहलोत ने कहा कि प्रदेश में पाला और शीतलहर पर पहली बार मुआवजा मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश को कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि के लिए लगातार दो वर्षों से कृषि कर्मण पुरस्कार मिला है, जो किसानों की मेहनत का फल है।

इस अवसर पर कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क ने कहा कि राजस्थान ही एकमात्र प्रदेश है, जहां किसानों को पुरस्कार दिए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि किसानों का हौसला बढ़ाने के लिए राज्य सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं। इन्हीं का परिणाम है कि यहां कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। बैठक में सम्बन्धित विभागों के मंत्रीगण तथा उच्चाधिकारीयों सहित बड़ी संख्या में किसान प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पशुपालन फायदेमंद व्यवसाय

नागौर, 17 फरवरी। नागौर जिले में आयोजित रामदेव पशु मेले में पशु प्रदर्शनी स्थल पर पशुपालकों को पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कृषि एवं पशुपालन मंत्री हरजीराम बुरड़क ने कहा कि अकालग्रसित क्षेत्रों में किसानों को पशुपालन पर ध्यान देना चाहिए। जिले में हर एक साल बाद अकाल की स्थिति बन जाती है इसलिए पशुपालन एक बड़े व्यवसाय के रुप में उभर सकता है। उन्होंने मेले को व्यापारियों व पशुपालकों के लिए विशेष महत्व वाला बताया।

श्री बुरड़क ने सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि सरकार का उद्देश्य पशुपालकों व काश्तकारों का मनोबल बढ़ाना है। इसलिए पशुपालकों के लिए राज्य स्तर पर पुरस्कार योजना शुरू की है। श्री बुरड़क ने मैला मैदान पर जिला औषधी भंडार का शिलान्यास भी किया।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर, पूर्व विधायक रिछपाल मिर्धा एवं अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

ओलावृष्टि पीड़ितों को राहत पैकेज देने की घोषणा

जयपुर, 17 फरवरी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रविवार को नई दिल्ली में मुख्य सचिव सी. के. मैथ्यू से चर्चा करने के बाद वर्ष 2013 में ओलावृष्टि से पीड़ित परिवारों के लिये राहत पैकेज की घोषणा की है।

इसके अन्तर्गत जिन लघु, सीमांत एवं अन्य कृषकों की 50 प्रतिशत से अधिक फसल की क्षति हुई है उनको ''राज्य आपदा मोचन निधि'' के मानदण्डों के अनुसार कृषि आदान–अनुदान दिया जाये, जो अधिकतम दो हैक्टर तक देय होगा।

पैकेज में असिंचित क्षेत्र के लिये 3 हजार रूपये प्रति हैक्टर, सिंचित क्षेत्र के लिये बिजली के कुओं व नहर से सिंचित क्षेत्र हेतु 6 हजार रूपये प्रति हैक्टर और डीजल पम्प सैट से सिंचित क्षेत्र हेतु 8 हजार रूपये प्रति हैक्टर अनुदान दिया जायेगा।

पैकेज के तहत जिन लघु एवं सीमान्त कृषकों की फसल में 50 प्रतिशत से अधिक खराबा हुआ है उनके बिजली के 4 माह के बिल माफ किये जाने के भी निर्देश दिये गये हैं। राहत पैकेज में घोषित सहायता, उन कृषकों को भी दी जा सकेगी जिनका नाम राजस्व रिकार्ड में दर्ज नहीं है किन्तु जिन्होंने भूमि पर ठेकेदारी/बाटेदारी से फसल की है। ओलावृष्टि से 50 प्रतिशत से अधिक खराबे वाले काश्तकारों को सिंचाई विभाग द्वारा लिया जाने वाला आबियाना शुल्क माफ किया जायेगा। सम्बन्धित जिला कलेक्टर घोषित पैकेज अनुसार राशि की गणना कर, बजट की ऑनलाइन मांग शीघ्र प्रस्तुत करेंगे तथा बजट आवंटित होते ही सहायता वितरण बिना विलम्ब शुरु करेंगे।

किसानों एवं उपनिवेशन सिंचित क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व बैठक में आए सुझाव

जयपुर, 13 फरवरी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित किसानों एवं उपनिवेशन सिंचित क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व बैठक में किसान प्रतिनिधियों ने सुझाव दिए कि किसानों को कीटनाशक सस्ती दरों पर उपलब्ध कराये जायें ताकि कम्पनियाँ किसानों से मनमाने दाम नहीं वसूल सकें। फसल बीमा योजना में पंचायत मुख्यालय को इकाई माना जाए, इससे किसानों को फायदा होगा। कृषि यंत्रों व उपकरणों पर ज्यादा से ज्यादा अनुदान दिया जाये। डेयरी के आधुनिकीकरण के लिए बजट और बढ़ाया जाये। लघु एवं सीमांत कृषक वर्ग के बच्चों की पढ़ाई के लिए छात्रवृति का प्रावधान किया जाये। मनरेगा योजना को कृषि से जोड़ा जाए। औषधीय फसलों पर अनुदान एवं इन फसलों का उचित दाम मिले। किसानों को बिजली दिन में दी जाये। लागत के अनुपात में कृषि उपज का मूल्य निर्धारित करने तथा किसान आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया जाने के सुझाव दिये गये। बैठक के अंत में कृषि मंत्री हरजीराम बुरड़क ने उपस्थित किसान प्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

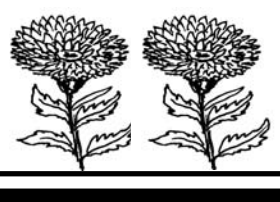

★ इस माह के कृषि कार्य परख
★ गुणी कमला
पृष्ठ 2

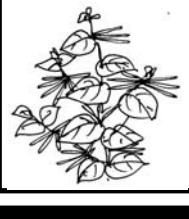

★ हरा चारा उगायें – दुग्ध उत्पादन बढ़ाएं
★ जायद मूंग एवं मूंगफली की उन्नत कृषि तकनीक
पृष्ठ 3

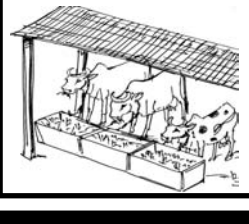

★ दुधारु पशुओं को संतुलित आहार खिलायें
पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

* **गेहूँ, जौ** आदि लम्बी बढ़ने वाली फसलों में तेज हवा चलने पर हल्की सिंचाई करें।
* **सरसों** की फलियां हल्की पीली पड़ने पर या फलियां चटकने से पहले कटाई करें।
* **गेहूँ** व **जौ** में दाने की दूधिया अवस्था एवं दाना पकते समय सिंचाई अवश्य करें।
* **रबी फसलों** की कटाई के तुरन्त बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई करें। इससे खरपतवार, कीट एवं बीमारी के नियंत्रण में मदद मिलती है।

बागवानी

* **बेर** की कटाई–छंटाई का उचित समय है। कृन्तन द्वितीय शाखा तक करें। कृन्तन करते समय अनचाही, रोगग्रस्त, सूखी एवं आपस में रगड़ खाती टहनियों को हटा देवें।
* **नीबू** में फल बनने की प्रक्रिया पूर्ण होने पर सिंचाई के साथ यूरिया 325 ग्राम प्रति पौधा की दर से देवें। फल गिरने की समस्या होने पर 2–4, डी दवा की 1 ग्राम मात्रा 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
* **अनार** में मृग बहार में फलन लेने हेतु मार्च से अप्रैल माह के अंत तक सिंचाई करें। वर्षा ऋतु वाली फसल में 7–10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।

सब्जियाँ

* **टमाटर** की खड़ी फसल में 60 किग्रा यूरिया प्रति हैक्टर की दर से छिटक कर दें।

* **कुष्माण्ड कुल** की फरवरी में बोई गई फसल में 55 किग्रा नत्रजन (110 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से देवें। बैंगन व मिर्च की पौध की रोपाई करें।
* **कुष्माण्ड कुल** की सब्जियों में विषाणु रोग जिनमें कुकुम्बर मोजेक वाइरस (सी.एम.वी.) व वाटर मेलन वाइरस (डब्ल्यू.एम.वी.) प्रकोप की संभावना है के लक्षण दिखाई देते ही पौधों को उखाड़कर जला देवें तथा कीटनाशी दवा ऐसीफेट 75 एस.पी. 2 ग्राम या मेलाथियॉन 50 ई. सी. 2 मि.ली. का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
* **कुष्माण्ड कुल** की सब्जियों में लाल भृंग कीट की रोकथाम के लिए कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रातः या सायं भुरकाव करें।
* **भिण्डी** में हरा तेला, मोयला व सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
* **बैंगन** में फल व तना छेदक कीटों की रोकथाम के लिए एसीफेट 75 एस.पी. 1 किलोग्राम दवा प्रति हैक्टर की दर से 200– 300 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पुष्पोत्पादन

* **गैंदा** (हजारा) की ग्रीष्मकालीन फसल में पौध रोपण के 30 दिन पश्चात् प्रथम निराई–गुड़ाई करें। खड़ी फसल में यूरिया 125 किलो प्रति हैक्टर की दर से देकर सिंचाई करें। पौध रोपण के 40 दिनों पश्चात् पौधे की शीर्ष कलिका को तोड़ें।

* **गुलाब** की निराई–गुड़ाई व सप्ताह में एक बार सिंचाई करें।
* गर्मी वाले मौसमी **फूलों** जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सनफ्लावर, कॉसमॉस, सेलोसिया व बालसम के बीजों को एक मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियां बनाकर बीज की बुवाई कर दें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

* मार्च के अन्त में भेडों में ऊन कतरने से पहले भेडों की डीपिंग करायें जिससे ऊन से गंदगी हट जायेगी ।
* भेड़, बकरियों में फड़किया रोग से बचाव हेतु टीका लगवायें।

परख

फरवरी, 2013 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री भगवती लाल जैन,**
   पो0 चन्द्रेसरा, वाया– खेमली,
   तह0 मावली,
   उदयपुर–313201
2. **श्रीमति मंजू भाटी,**
   पत्नी श्री परमेश्वर भाटी,
   4 बी, पश्चिम मार्केट,
   सरदार शहर,
   जिला–चूरु–331403

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 ज्वार की बहु–कटाई वाली दो उन्नत किस्मों के नाम बताइये ?

प्र.2 मूँगफली की फसल में बीजोपचार हेतु प्रति हैक्टर कितने पैकेट राइजोबियम कल्चर की आवश्यकता होती है ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –

उप निदेशक कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

हरा चारा उगायें - दुग्ध उत्पादन बढ़ाएं

सामान्यतः रबी फसलों की कटाई के बाद हरे चारे की कमी हो जाती है। दुधारू पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए हरे चारे की नियमित उपलब्धता आवश्यक है। हरे चारे में प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि तत्व उचित मात्रा में उपलब्ध होने से पशुओं में दूध उत्पादन बढ़ता है। हरा चारा पशु को एक दिन में 15 – 20 किलो व दिन में 3 – 4 बार खिलायें। हरे चारे के अलावा एक दिन में 6 – 7 किलो सूखा चारा भी पशु को खिलायें। जिन किसान भाईयों के पास सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, उन्हें चारा फसलों को उगाने की पहल करनी चाहिए। इससे दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी और किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी।

क्र. सं.	कृषि विधियां	ज्वार	बाजरा	मक्का
1.	**उन्नत किस्में**	एक कटाई वाली–राजचरी–1, राजचरी–2, राजचरी–3 व पूसा चरी–6 बहु कटाई वाली– एस.एस.जी.–59–3, एम.पी. चरी, पी.सी.–9, पी.सी–23	राज बाजरा चरी–2, राजको एल.–72, एल.–74, जाइन्ट, एच.बी.–11, को–8, पी.सी.बी.–164, के–599	अफ्रीकन टॉल, जे–1006, मोती कम्पोजिट, गंगा–2, गंगा–3, गंगा–5, गंगा–7
2.	**भूमि उपचार**	भूमिगत कीड़े व दीमक की रोकथाम हेतु 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत 20–25 किग्रा प्रति हैक्टर की दर से भूमि में बिजाई से पूर्व मिलायें।	दीमक व सफेद लट की रोकथाम के लिए मिथाईल पेराथियान 2 प्रतिशत 25 किग्रा प्रति हैक्टर की दर से बुवाई पूर्व भूमि में मिलावें।	भूमिगत कीड़े दीमक व तना छेदक कीट की रोकथाम के लिए बुवाई के 15 से 20 दिन पूर्व फोरेट 10 जी. कण अथवा कार्बोफ्यूरान 3 जी. कण 7.5 किग्रा प्रति हैक्टर की दर से भूमि में मिलावें।
3.	**बीजोपचार**	2–3 ग्राम वीटावेक्स या थायरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। साथ ही ऐजोटोबैक्टर जीवाणु कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से भी उपचारित करें।	2 ग्राम बावस्टिन या थायरम व 5 मि.ली. क्लोरोपाइरीफॉस प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें। साथ ही ऐजोटोबैक्टर जीवाणु कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से भी उपचारित करें।	थायरम या केप्टान की 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित करें। साथ ही ऐजोटोबैक्टर जीवाणु कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से भी उपचारित करें।
4.	**बीज दर** **एकल फसल** **मिश्रित फसल**	 40–50 किग्रा/ हैक्टर 20–26 किग्रा/ हैक्टर	 10–12 किग्रा/हैक्टर 6–7 किग्रा/हैक्टर	 60 किग्रा/ हैक्टर 30 किग्रा/ हैक्टर
5.	**बुवाई का समय**	मार्च–ग्रीष्मकालीन जुलाई–वर्षाकालीन	15 फरवरी से मार्च– ग्रीष्मकालीन जुलाई– वर्षाकालीन	फरवरी से मार्च– ग्रीष्मकालीन वर्षाकालीन चारे के लिए बुवाई जून–जुलाई व अगस्त तक की जाती है।
6.	**जैविक खाद**	15–20 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट प्रति हैक्टर	8–10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद का प्रयोग प्रति हैक्टर करें।	12–15 प्रति हैक्टर अच्छी सड़ी हुई गोबर खाद या कम्पोस्ट डालना चाहिए।
7.	**नत्रजन**	60 किग्रा प्रति हैक्टर (दो तिहाई बुवाई के समय व एक तिहाई मात्रा बुवाई के 40 से 45 दिन बाद एवं प्रत्येक कटाई पर 25–30 किग्रा/ हैक्टर अतिरिक्त नत्रजन का प्रयोग करें)	60 किग्रा प्रति हैक्टर (दो तिहाई बुवाई के समय शेष मात्रा बुवाई के 30–35 दिन बाद एवं एक से अधिक कटाई हेतु 25–30 किग्रा प्रति हैक्टर प्रति कटाई पर अतिरिक्त नत्रजन देवें)।	75 किग्रा/ हैक्टर (बुवाई के समय एक तिहाई मात्रा, बुवाई के 30–35 दिन बाद एक तिहाई मात्रा व शेष मात्रा मक्का में मांजर आने के पूर्व देनी चाहिए)
8.	**फॉस्फोरस**	40–60 किग्रा फॉस्फोरस प्रति हैक्टर बुवाई के समय खेत में ऊर कर दवें।	40–60 किग्रा प्रति हैक्टर बुवाई के समय खेत में ऊर कर देवें।	प्रति हैक्टर 40–50 किग्रा फॉस्फोरस व 25 किग्रा जिंक सल्फेट बुवाई के समय भूमि में 10 सेमी गहराई तक ऊर कर देवें।
9.	**सिंचाई प्रबन्धन**	बुवाई के 10–12 दिन बाद प्रथम सिंचाई करें एवं अन्य सिंचाईयां 12–15 दिन के अन्तराल पर करें।	प्रथम सिंचाई बुवाई के 12–14 दिन बाद एवं अन्य सिंचाईयां 15–16 दिन के अन्तराल पर करें।	ग्रीष्मकालीन मक्का में बुवाई के बाद 10 से 12 दिन पर 4 से 6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। वर्षाकाल में खेत में पानी भरे रहने की स्थिति में चारा उत्पादन प्रभावित होता है अतः उचित जल निकास करें।
10.	**मिश्रित फसल संयोग**	ज्वार के साथ ग्वार चंवले का मिश्रण	बाजरे के साथ ग्वार व चँवला (इन्टरक्रॉप) लाभदायक रहती है।	मक्का के साथ चँवला व ग्वार का मिश्रित चारा लिया जाना चाहिए।
11.	**खरफतवार नियन्त्रण**	बुवाई से पूर्व पलेवा देकर खरपतवार नष्ट करें। बाद में खरपतवारों को एक/दो निराई करके निकालें। निराई–गुड़ाई के लिए व्हील या हैण्ड हो का प्रयोग करें।	बुवाई के तीसरे व चौथे सप्ताह तक खेत में निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकालें।	बुवाई के 30–35 दिन बाद एक निराई–गुड़ाई पर्याप्त होती है।
12.	**कटाई**	प्रथम कटाई फूल आना शुरु होने पर या 50 प्रतिशत फूल आने पर बुवाई के 60–65 दिन पर एवं बाद में कटाई 40–45 दिन के अन्तराल से लेवें।	प्रथम कटाई फूल आना शुरु होते ही 55–60 दिन पर तथा बाद की कटाइयां 35–40 दिन के अन्तराल से लेवें।	मक्का में 50 प्रतिशत मांजर आने वाली अवस्था व बुवाई के 65 से 75 दिन बाद कटाई करें।
13.	**हरा चारा की उपज**	एक कटाई: 350–400 क्विंटल प्रति हैक्टर चार कटाई: 900–950 क्विंटल प्रति हैक्टर	एक कटाई: 400–500 क्विंटल प्रति हैक्टर चार कटाई: 900–1000 क्विंटल प्रति हैक्टर	हरे चारे वाली किस्मों से 350–400 क्विंटल प्रति हैक्टर हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

जायद मूंग एवं मूँगफली की उन्नत कृषि तकनीक

जायद मूंग

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है जो 60 से 65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च के मध्य की जाती है।

★ **किस्में**– पूसा बैसाखी, आर.एम.जी–62, आर.एम.जी–268, एस.एम.एल.668, एस–8, एस–9, के–851, आर.एम.जी.344, आर.एम.जी.492

★ मूंग को बीज जनित बीमारियों (जैसे **उखटा,झुलसा आदि**) से बचाने के लिए 3 ग्राम कैप्टान या 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम या 5 ग्राम इमिडाक्लोप्रिड प्रति किलो बीज तथा जैविक फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा 6–8 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से तथा अन्त में राईजोबियम कल्चर 3 पैकिट फिर पीएसबी कल्चर 3 पैकिट प्रति हैक्टर से विभागीय सिफारिश अनुसार उपचारित कर बुवाई करें।

★ एक हैक्टर क्षेत्रफल के लिए 15–20 किलो बीज पर्याप्त होता है। कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखें।

★ बुवाई से पूर्व 250 किलो जिप्सम खेत में डालें। उर्वरकों में 90 किलो डी.ए.पी एवं 10 किलो यूरिया भी बुवाई के समय ऊरकर देवें।

★ मूंग की फसल में बुवाई के 25 से 30 दिन बाद निराई गुड़ाई करें। इससे खरपतवार की रोकथाम के साथ ही नमी का भी संरक्षण होता है।

★ मूंग की फसल में **मोयला, हरा तेला, फली छेदक** का प्रकोप हो तो अजाडिरेक्टिन (0.03 प्रतिशत ई.सी.) 1.5 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

★ मूंग में चित्ती जीवाणु रोग की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 5 ग्राम तथा 300 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड का प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें। मूंग में पीतशीरा मोजेक होने पर रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ देवें एवं डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर दवा को पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से 300 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

★ मूंग की फसल में फूल आने से पूर्व 30–35 दिन एवं फली बनते समय 40–50 दिन की अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें।

★ मूंग की फसल पकने पर फलियों के चटकने से पहले काट लेवें। फसल सूखने पर गहाई कर दाना निकाल लेवें।

जायद मूँगफली

मूंगफली एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है जो दलहनी फसलों के समान मृदा में नाइट्रोजन को स्थिर

शेष पृष्ठ 4 पर.....

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–

उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

दुधारु पशुओं को संतुलित आहार खिलायें

पशुपालन व्यवसाय को कृषि व्यवसाय की नींव या रीढ़ की हड्डी माना जाता है। परन्तु हमारा पशुधन उत्पादन, बढ़वार, प्रजनन एवं कृषि कार्य में पिछड़ा रहता है और इस समस्या का मूल कारण कुपोषण है । अतः हमारे पशुओं को लाभकारी बनाने के लिए अच्छे आहार की जानकारी होनी अति आवश्यक है।

संतुलित आहार

ऐसा चारे–बांटे का मिश्रण जो पशुधन के शरीर भार में वृद्धि एवं उत्पादन की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए सभी पौष्टिक तत्व जैसे– कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण, विटामिन व पानी की उचित मात्रा एवं अनुपात में उपलब्ध कराते हैं।

आहार का वर्गीकरण

आहार चारे व बांटे के रुप में मुख्यतः दो भागों में बांटा जाता है और मोटे तौर पर कुल आहार का दो तिहाई भाग चारे के रुप में व एक तिहाई भाग को दानें–बांटे के रुप में दिया जाना चाहिए अथवा एक पशु के शारीरिक भार का 2.5 प्रतिशत सूखा

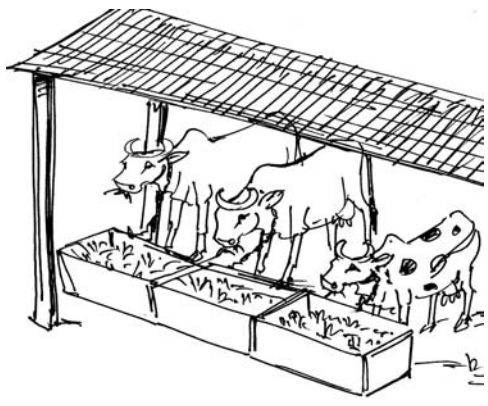

चारा या 10 प्रतिशत हरा चारा तथा उत्पादन अनुसार दाना–बांट दिया जाना चाहिए।

चारा कैसे देवें

पशुपालक प्रायः सस्ता व निम्न श्रेणी का चारा जैसे तूड़ी या कड़बी खिलाते हैं। ऐसे चारे को यूरिया व गुड़ से उपचारित करके खिलायें। इसके लिए 1 किलो यूरिया, 5 किलो गुड़, 2 किलो नमक व 1 किलो खनिज लवण को 10 किलो पानी में घोलकर 100 किलो सस्ते चारे पर बराबर मात्रा में छिड़क कर अच्छी तरह से मिलाकर सुखा लेवें तथा नियमित रुप से जुगाली करने वाले वयस्क पशु को खिलाना चाहिए।

घास चारा

हरी घास को अग्रिम समय में परिपक्व होने से पहले पुष्पन या दूधिया अवस्था में काटकर अच्छी तरह सुखा लेवें तथा हरी घास की अनुपस्थिति में पौष्टिक चारे के रुप में खिलायें। परन्तु ध्यान रखें कि इसमें 15 प्रतिशत से अधिक नमी न रहे।

हरा चारा

दुधारु पशु को स्वस्थ रखने एवं उत्पादन बढ़ाने में हरे चारे का महतवपूर्ण योगदान होता है। सर्दियों में रिजका या बरसीम, जई के साथ तथा गर्मियों में चरी, ग्वार या चंवला का हरा चारा खिलायें। ध्यान रखें कि हरे चारे के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें। दुधारु पशुओं के लिए स्वयं के खेत पर हरा चारा उगाकर खिलाने से सस्ता दूध उत्पादित किया जा सकता है इसके साथ–साथ पशुओं की पानी की आवश्यकता भी कम हो जाती है जिससे पानी की बचत होती है।

दाना या बांटा

पशु आहार का दूसरा भाग दाना या बांटा वह भोज्य पदार्थ है जिसमें कच्चे रेशे की मात्रा बहुत कम एवं पौष्टिक तत्वों की मात्रा भरपूर व पाचनशीलता अधिक होती है। सामान्य अवस्था में पशुओं को आवश्यकतानुसार रोजाना बांटा अवश्य खिलाना चाहिए और बांटे के मिश्रण में अनाज, अनाज के अवयव, तिलहन की खल, दालों की चूरी, चापड़, दालों का छिलका एवं गुड़ का समावेश होना जरुरी है।

पृष्ठ 3 का शेष.....(जायद मूंग.....)

कर इसकी उर्वरा को बढ़ाती है। इसकी विभिन्न किस्मों में तेल की मात्रा 43 से 52 प्रतिशत तक होती है।

★ **उन्नत किस्में–** आर.जी. 141, टी.जी.37ए, जी.जी. 2, टी.ए.जी. 24

★ **कॉलर रोट** रोग से बचाव के लिए एक किलो बीज को 3 ग्राम थाईरम या 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम या 6 ग्राम ट्राइकोडर्मा से उपचारित कर बोयें।

★ **सफेद लट** की रोकथाम के लिए 40 किलो बीज को एक लीटर क्लोरपायरीफॉस से उपचारित करें।

★ **जैविक उपचार–** अन्त में राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

★ झुमका किस्मों का 100 किलो बीज (गुली) प्रति हैक्टर बुवाई हेतु काम में लेवें। झुमका किस्मों में कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 8–10 सेन्टीमीटर रखें।

★ फरवरी के मध्य पखवाड़े में उपलब्ध जल के अनुसार बुवाई करें।

★ **उर्वरक–** मूंगफली के खेत में प्रति हैक्टर 130 किलो डीएपी या 375 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 35 किलो यूरिया बुवाई से पूर्व उर कर देवें। पोटाश की कमी वाली भूमि में 30 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश भी बुवाई से पूर्व देवें। इसके अलावा अन्तिम जुताई से पूर्व 250 किलो जिप्सम भी मिलावें। जस्ते की कमी वाली भूमि में 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हैक्टर बुवाई से पूर्व देवें। जहाँ तक सम्भव हो उर्वरकों का उपयोग मिट्टी परीक्षण रिर्पोट के आधार पर करें।

★ **सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई–** आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करें खास तौर पर फूल आने, सुईयां बनते वक्त एवं दाना बनते समय करें।

★ सूईयॉ बनने से पहले 30 दिन की फसल होने तक निराई–गुड़ाई करें तथा खेत से खरपतवारों को निकालते रहें। जहां निराई गुड़ाई करना मुश्किल हो वहां पर पेन्डीमिथेलिन 30 ई.सी. की प्रति बीघा 175 ग्राम मात्रा का प्रयोग बुवाई के दो दिन बाद तथा पुनः 6 सप्ताह, सिंचाई के तुरन्त बाद छिड़काव कर देवें।

★ खड़ी फसल में **दीमक** का प्रकोप होने पर चार लीटर क्लोरपायरीफॉस प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें।

★ **सफेद लट–** बुवाई से पूर्व भूमि को फोरेट 10–जी कण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से उपचारित करें।

★ खड़ी फसल में सफेद लट का प्रकोप दिखाई देने पर प्रति हैक्टर 4 लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. सिंचाई के पानी के साथ देवें।

★ **मोयला कीट–** खड़ी फसल में मोयला कीट का प्रकोप होने पर मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी.1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

★ **टिक्का रोग–** इस रोग से फसल के पौधों की पत्तियों पर गहरे भूरे

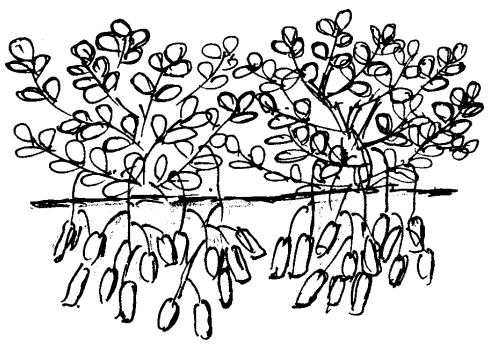

मटियाले धब्बे पड़ जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेण्डेजिम आधा ग्राम या मैंकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़कें। यह छिड़काव 15 दिन के बाद पुनः दोहराएं।

★ **पीलिया रोग–** पीलिया रोग से प्रभावित क्षेत्र में बुवाई से पूर्व 250 किलो घुलनशील गंधक प्रति हैक्टर डालें। इसके अभाव में हरा कसीस आधा ग्राम प्रति लीटर पानी या व्यापारिक गंधक का तेजाब 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फूल आने से पहले व बाद में छिड़काव करें।

★ **कॉलर रोट–** इस रोग का प्रकोप होने पर भूमि की सतह के पास पौधों की जड़ें काली पड़ जाती हैं तथा रोग तीव्र गति से सम्पूर्ण फसल में फैल जाता है। रोग से बचाव के लिए बीज को 3 ग्राम थाईरम या 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम या 6 ग्राम ट्राईकोडरमा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें। खड़ी फसल में कालर रॉट नियंत्रण के लिए ट्राईकोडर्मा कल्चर 2.5 किलो एवं 100 किलो गोबर की खाद मिलाकर 24–48 घंटे संर्वधन कर सांयकाल भुरकाव कर नियंत्रण करें।

किसान भाई इस प्रकार फसल उत्पादन के प्रभावी बिन्दुओं को अपनाकर फसल की उत्पादकता बढ़ाकर अधिक आमदनी एवं मुनाफा कमा सकते हैं।

जैविक खेती का वादा
खर्चा कम मुनाफा ज्यादा

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– अनिल गुप्ता
सम्पादक	– भंवरा राम कड़वा
सह सम्पादक	– पूनम चौधरी
परामर्श	– शिवजी राम कटारिया
डिजाइनर	– आर. मैसी